पाठ - 16 : अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश

मूल विषय

यह संपादकीय दिल्ली से छपने वाली मासिक साहित्यिक पत्रिका 'हंस' से लिया गया है, जिसे पत्रिका के संपादक राजेंद्र यादव ने लिखा है।पत्र-पत्रिकाओं में स्थायी रूप से प्रकाशित होने वाला एक स्तंभ है- संपादकीय, जिसमें किसी समसामयिक विषय या घटना पर गंभीर टिप्पणी की जाती है। 'हंस' साहित्यिक पत्रिका है और इसके संपादक स्वयं हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। अतः उनका शिक्षा तथा साक्षरता जैसे विषय पर टिप्पणी करना स्वाभाविक है। इसमें राजेंद्र यादव ने अपनी चुटीली और व्यंग्यात्मक शैली में यह बताने की कोशिश की है कि हमारे देश में मनोरंजन, ऐशो-आराम तथा कंप्यूटर जैसे बड़े-बड़े आधुनिक उपकरणों पर तो बेतहाशा खर्च किया जा रहा है परंतु ज्ञान प्रसार की बुनियादी चीज़-किताब पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा। उन्होंने इसे सामंतों, पूँजीपतियों, नेताओं और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की साज़िश बताया है।

मुख्य बिंदु

प्रयोजनमूलक हिन्दी :- जिसका उपयोग हम सरकारी पत्राचार, संक्षेपण, संपादकीय, बैंक की गतिविधियों के निपटान के लिए कामकाजी हिंदी के रूप में करते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी के मुख्य रूप से छह क्षेत्र देखे जा सकते हैं-

1. तकनीकी भाषा - यह इंजीनियरी, विज्ञान शास्त्र या चिकित्सा आदि के क्षेत्र में
2. प्रयुक्त भाषा और विशेष शब्दावली का रूप है।
3. कार्यालयी भाषा - सरकारी कामकाज या प्रशासन में प्रयुक्त होने वाला भाषा रूप।
4. वाणिज्यिक भाषा - यह वाणिज्य, बैंक या मंडियों में प्रयुक्त भाषा का रूप है।
5. जनसंचारी भाषा - पत्राकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन और विज्ञापनों में प्रयुक्त भाषा। सामाजिक भाषा-इसका प्रयोग सामाजिक कार्यकर्ता करते हैं।
6. साहित्यिक भाषा - इसका प्रयोग काव्य, नाटक, साहित्य शास्त्रा आदि की भाषा में होता है।

संपादकीय के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा :-

1. विषय-वस्तु :- संपादकीय क्योंकि अत्यंत संक्षिप्त विधा है अतः इसकी विषय-वस्तु में अधिक विस्तार और व्यापकता की गुंजाइश नहीं होती। इसमें प्रायः एक ही विषय को उठाया जाता है तथा तर्क-वितर्क और उदाहरणों की सहायता से विषय का विवेचन करने के उपरांत निष्कर्ष निकाला जाता है, जिससे पाठकों को उस विषय पर अपनी राय बनाने में मदद मिलती है। इसमें मुख्य रूप से भारत के आम लोगों को साक्षर बनाने में आ रही बाधाओं का उल्लेख किया गया है। यह संपादकीय 1976 में आम बजट के कुछ प्रावधानों को आधार बनाकर लिखा गया था, जिसमें कागज़ के दाम बढ़ाए गए थे लेकिन पूँजीपतियों और अमीर लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली ऐशो-आराम की चीज़ों के आयात की छूट दी गई। इस दृष्टि से यह संपादकीय आज की स्थिति में भी प्रासंगिक है।
2. समसामयिकता :- यह 1986 के केंद्रीय बजट में अमीरों के इस्तेमाल की ऐशो-आराम की बहुत-सी चीज़ों के आयात की छूट देने तथा कागज़ के दाम बढ़ाने के कदम को आधार बनाकर देश की संस्कृति पर हो रहे प्रहारों तथा सही शिक्षा की अनदेखी होने की दुखद स्थिति का बड़ी कुशलता से चित्रण किया है। शिक्षा की कमी तथा टी.वी., वीडियो, कंप्यूटर जैसी आयातित चीज़ों के लिए बढ़ती हुई ललक उस समय के हिसाब से और आज के हिसाब से भी समसामयिक होने के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण समस्या है।

3. विवेचनात्मकता :- इसमें विषय का बहुत ही गहराई और विस्तार के साथ विवेचन किया गया है। बजट में कागज़ की कीमत की वृद्धि सामान्य शब्दों में आम लोगों को शिक्षा से वंचित रखने के साथ-साथ संस्कृति को भ्रष्ट करने के षड्यंत्र को पहचानना तथा उसकी पृष्ठभूमि, परिणामों और विविध रूपों को साफ़-साफ़ बयान करना संपादक की पैनी दृष्टि तथा विवेचन क्षमता का प्रमाण है।लेखक ने अपने देश के साथ-साथ विदेशी घटनाओं और इतिहास के कई पन्नों को पलटते हुए यह साबित करने की कोशिश की है कि शिक्षा और साक्षरता विकास की पहली सीढ़ियाँ हैं और सत्ता तथा अधिकार के भूखे लोग आम जनता को इस शक्ति से वंचित रखने के प्रयास में लगे रहते हैं।

4. दृष्टिकोण की स्पष्टता :- इसमें संपादक ने बिना किसी लाग-लपेट के एकदम स्पष्ट राय प्रकट की है कि किस तरह देश की जनता का शोषण करने वालों ने जनता को जागृति, सूझबूझ और चेतना ला सकने वाली पुस्तकों से वंचित करने का षड्यंत्र रच रखा है।

5. भाषा-शैली :- भाषा सुबोध, ओजपूर्ण तथा चुटीली बन पड़ी है। यह विषय की गंभीरता को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है और पत्रिका के पाठकों के स्तर के अनुरूप ही खरी उतरती है। विषय के बहाव के अनुसार इसमें विविधता के भी दर्शन होते हैं।इसमें व्यंग्य का बहुत जोरदार ढंग से प्रयोग किया गया है।

   रचनाकार नए-नए शब्दों का गठन करता है| उदाहरण - विसांस्कृतिक वैज्ञानिकता जैसी नवसृजित शब्दावली। इसी प्रकार स्थान-स्थान पर लेखक ने पैने वाक्य रचे हैं, जो सोचने-विचारने पर मजबूर करते हैं, जैसे-'शार्टकट कितना आत्मघाती है'।

6. उद्देश्य :- संपादकीय में प्रारंभ से अंत तक भारतीय परिवेश में शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित किया गया है और आधुनिक युग के नए-नए उपकरणों तथा परंपरागत रीति-रिवाजों की चर्चा करते हुए इसी तथ्य से पाठकों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा जैसी अत्यंत आवश्यक चीज़ से आप लोगों को वंचित रखा जा रहा है और सरकार तथा पूँजीपति वर्ग व्यर्थ की ऐसी चीज़ों पर पैसा लगा रहे हैं जिनसे केवल मुट्ठी भर लोगों की स्वार्थपूर्ति और मनोरंजन होता है।

7. शीर्षक की सार्थकता :- 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' शीर्षक इस संपादकीय के मूल विषय और उद्देश्य को अत्यंत सार्थक ढंग से अभिव्यक्त करता है। केवल पाँच शब्दों के इस शीर्षक में तीखापन भी है, क्योंकि इसमें एक सामूहिक कार्रवाई को साज़िश कहा गया है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' की संपादकीय के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।
2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिएः
   (क) संपादकीय का स्वरूप और भाषा
   (ख) 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' संपादकीय का उद्देश्य
   (ग) साक्षरता का महत्त्व
3. किसी अख़बार के संपादकीय को पढ़कर उसकी किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. किसी ज्वलंत मुद्दे पर एक संपादकीय लिखिए।